Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 5, May - 2025

DOIs:10.2018/SS/202505008 --:-- Research Paper / Article / Review

भारतीय ज्ञान प्रणाली के विकास में पुस्तकालयों का योगदान

डॉ. नंद किशोर

सहायक आचार्य , पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग, श्री जे जे टी विश्वविद्यालय , ग्राम- चुड़ैला, जिला - झुंझुनू , राजस्थान

Email - nksb2y@gmail.com

सार (Abstract) : प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक समय तक, पुस्तकालयों ने भारतीय समाज में ज्ञान के प्रसार, संरचनात्मक विकास, और शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन शिक्षा केंद्रों से लेकर औपनिवेशिक भारत और स्वतंत्रता के बाद तक, पुस्तकालयों ने ज्ञान के भंडारण और प्रसार के रूप में एक अहम कार्य किया। आज के डिजिटल युग में, डिजिटल पुस्तकालयों और इंटरनेट संसाधनों के माध्यम से पुस्तकालयों ने ज्ञान की पहुँच को और सुलभ और विस्तृत बना दिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को सशक्त बनाने में पुस्तकालयों का योगदान अनमोल है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, पुस्तकालय, नालंदा, ज्ञान संरक्षण, सार्वजनिक पुस्तकालय, शैक्षिक विरासत, भारत का बौद्धिक इतिहास ।

1. प्रस्तावना (Introduction) :

भारत का इतिहास ज्ञान और शिक्षा के मामले में प्राचीन और समृद्ध रहा है। प्राचीन काल से ही यहाँ पुस्तकालयों का अस्तित्व रहा है, जो न केवल ज्ञान के संग्रहण का स्थल होते थे, बल्कि विचारों के आदानप्रदान-, शोध और अध्ययन के महत्वपूर्ण केंद्र भी थे। भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकास विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक परिवर्तनों से हुआ है, और इस विकास में पुस्तकालयों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। भारत में पुस्तकालयों का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आज तक एक महत्वपूर्ण अध्याय रहा है। इस लेख में हम भारतीय ज्ञान प्रणाली के विकास में पुस्तकालयों के योगदान पर चर्चा करेंगे(Rajkumar, et. al., 2025)[1]।भारतीयज्ञानप्रणाली) Indian Knowledge System - IKS) एक पारंपरिक, दार्शनिक, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, जो भारत की प्राचीन सभ्यता, शिक्षा, और बौद्धिक परंपराओं पर आधारित है। यह वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित, वास्तुशास्त्र, नाट्यशास्त्र, और अन्य पारंपरिक ज्ञान शास्त्रों में संरक्षित है (Mandavkar, 2023)[2]।

भारत में ज्ञान की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है, जहाँ मौखिक परंपरा के साथ-साथ लिखित ग्रंथों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी थी। इस ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय केवल ग्रंथों के भंडार नहीं थे, बल्कि वे विद्वानों, छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए विचार-विमर्श और बौद्धिक विकास के केंद्र भी थे (Mukherjee & Bhattacharya, 2015)[3]। भारतीय ज्ञान प्रणाली, जिसमें वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, वास्तुशास्त्र और दर्शन शामिल हैं, के निरंतर विकास में इन पुस्तकालयों ने संरचनात्मक आधार प्रदान किया।

मध्यकाल में भी मंदिरों, मठों और दरबारों में निजी तथा सार्वजनिक पुस्तकालय विद्यमान थे, जहाँ संस्कृत, फारसी, अरबी एवं अन्य भाषाओं में बहुमूल्य ग्रंथ संग्रहित थे (Kumar, 2012)[4]। आधुनिक काल में, विशेषकर स्वतंत्रता के पश्चात, सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियमों और संस्थागत पुस्तकालयों के माध्यम से ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की दिशा में कदम उठाए गए (Ranganathan, 1931)[5]। इस प्रकार पुस्तकालयों ने भारत में न केवल पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में, बल्कि आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के विकास में भी अहम भूमिका निभाई है। **Ministry of Education, Government of India** (n.d)[6] के द्वारा दिये गये भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुखतत्व:-

- वेद एवं उपनिषद – आध्यात्मिक ज्ञान, ब्रह्मांड की उत्पत्ति, आत्मा और मोक्ष से संबंधित विचार।
- योग और आयुर्वेद – स्वास्थ्य और चिकित्सा पद्धति, शरीरमन संतुलन।-
- ज्योतिष और गणित – कालगणना, शून्य की खोज, त्रिकोणमिति, खगोलशास्त्र।

- नाट्यशास्त्र और साहित्य – रंगमंच, नृत्य, काव्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र।
- वास्तुशास्त्र और शिल्पकला – स्थापत्य कला, मंदिर निर्माण, नगर योजना।
- अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र – चाणक्य नीति, सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन।
- न्याय एवं दर्शन – तर्कशास्त्र, मीमांसा, सांख्य, वेदांत।
- पर्यावरण एवं कृषि विज्ञान – पारंपरिक जल प्रबंधन, पंचगव्य, जैविक खेती।

2. भारत में पुस्तकालयों का इतिहास

भारत में पुस्तकालयों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। प्राचीन काल में ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण साधन थे। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और अनेकों गुरुकुलों में समृद्ध पुस्तकालय हुआ करते थे। आधुनिक काल में भी पुस्तकालय भारतीय समाज में शिक्षा और ज्ञान प्रसार का एक प्रमुख स्तंभ बने हुए हैं (Muktabodha Indological Research Institute, n.d)[7]।

2.1. प्राचीन भारत में पुस्तकालयों का महत्व - भारत में ज्ञान की परंपरा प्राचीन काल से ही थी। वेदों, उपनिषदों, और अन्य धार्मिक ग्रंथों के रूप में भारतीय ज्ञान की नींव रखी गई थी। इन ग्रंथों को संरक्षित और संरचित करने का कार्य पुस्तकालयों ने किया। भारतीय सभ्यता में पहले पुस्तकालयों का अस्तित्व शाही दरबारों और धार्मिक संस्थाओं में था(Muktabodha Indological Research Institute, n.d)[7]।

- नालंदा विश्वविद्यालय (5वीं – 12वीं शताब्दी) प्राचीन भारत में शिक्षा और ज्ञान का प्रसार प्रमुख शिक्षा केंद्रों द्वारा किया जाता था, जिनमें नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय प्रमुख थे। नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय के "धर्मगांध" नाम से प्रसिद्ध था। यह पुस्तकालय न केवल बौद्ध धर्म से संबंधित ग्रंथों का भंडारण करता था, बल्कि गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, और साहित्य के विषयों पर भी किताबों का संग्रह था। यही नहीं, यहाँ पर शिक्षा लेने के लिए विदेशी छात्र भी आते थे, जो इस पुस्तकालय का उपयोग करते थे(Narasimhan, 2006)[8]।
- तक्षशिला विश्वविद्यालय(6वीं शताब्दी ईसा पूर्व – 5वीं शताब्दी ईस्वी) का पुस्तकालय भी वैसा ही महत्वपूर्ण था, जहाँ विज्ञान, गणित, दर्शन और चिकित्सा के पाठ्यक्रमों पर आधारित पुस्तकें और शास्त्रों का संग्रह किया गया था। इन पुस्तकालयों का उद्देश्य न केवल धार्मिक विचारों का प्रसार करना था, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं पर ज्ञान और शिक्षा का प्रसार भी करना था। इन पुस्तकालयों ने भारतीय समाज में ज्ञान के आदान प्रदान का मार्ग प्रशस्त-किया।
- विक्रमशिला विश्वविद्यालय (8वीं – 12वीं शताब्दी) पाल वंश के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय बौद्ध अध्ययन का प्रमुख केंद्र था।यहाँ भी एक विशाल पुस्तकालय था, जिसमें संस्कृत, बौद्ध और अन्य विषयों की पांडुलिपियाँ रखी जाती थीं।
- अयोध्या, काशी और मदुरै के मंदिर पुस्तकालय भारत के प्राचीन मंदिरों में ज्ञान के भंडार रूप में पुस्तकालय हुआ करते थे।
- दक्षिण भारत के सरस्वती महल पुस्तकालय ज्ञान के भंडार रूप में महत्वपूर्ण है |

2.2. मध्यकाल में पुस्तकालयों का उत्थान और पतन - मध्यकाल में भारत में विभिन्न साम्राज्य और शाही दरबारों का प्रभुत्व था, लेकिन साथ ही यह एक संकटग्रस्त काल भी था, जहाँ विदेशी आक्रमणों और धार्मिक उथलपुथल के कारण ज्ञान और-पुस्तकालयों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। हालांकि, इस काल में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकालयों का अस्तित्व था, लेकिन उनमें से अधिकांश या तो नष्ट हो गए या फिर उनका महत्व कम हो गया(Habib, 1999)[9]।

- मुगल साम्राज्य में पुस्तकालयों का अस्तित्व - मुगल साम्राज्य के दौरान कुछ पुस्तकालयों का स्थापना और विकास हुआ था। शाही दरबारों में पुस्तकालयों का योगदान था, जहाँ राजा महाराजा और दरबारी बौद्धिक और सांस्कृतिक-चर्चाओं में हिस्सा लेते थे। मुघल सम्राट अकबर ने अपनी अदालत में विद्वानों को समर्पित किया था और उन्होंने कई पुस्तकालयों कानिर्माण किया था, जिनमें ऐतिहासिक ग्रंथ, कला, और संस्कृति से संबंधित पुस्तकें थीं। सम्राट शाहजहाँ और आगरा तथा दिल्ली में स्थापित पुस्तकालयों ने साहित्य और इतिहास के प्रसार में मदद की। हालाँकि, यह पुस्तकालय सीमित समय के लिए थे और अकसर युद्ध और आक्रमणों के कारण इन्हें नुकसान पहुँचा था(Habib, 1999)[9]।
- औपनिवेशिक भारत में पुस्तकालयों का विकास - टिश शासन के दौरान भारतीय पुस्तकालयों का स्वरूप और उद्देश्य एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुँचा। ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीय समाज को नियंत्रित करने केलिए कई नीतियाँ बनाई, जिनका प्रभाव शिक्षा और पुस्तकालयों पर पड़ा। हालांकि, ब्रिटिश साम्राज्य के तहत भारत में कुछ आधुनिक पुस्तकालयों की नींव रखी गई(Chakrabarti, 2010)[10]।

2.3. सार्वजनिक पुस्तकालयों की शुरुआत - 19वीं सदी के अंत तक भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों की अवधारणा शुरू हुई। कोलकाता (कलकत्ता) में Asiatic Society Library की स्थापना 1828में की गई, जिसे एक शैक्षिक और सांस्कृतिक स्थल के रूप में देखा जाता था। इसके अलावा, राज्य पुस्तकालय की स्थापना भी हुई, जहाँ न केवल ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ग्रंथ थे, बल्कि समकालीन शोध पत्रों और पुस्तकों का भी संग्रह किया गया(Chakrabarti, 2010)[10]।

3. ब्रिटिश शासन में पुस्तकालयों का इतिहास

ब्रिटिश शासन में भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को शिक्षा की आवश्यकता महसूस हुई, और इसके परिणामस्वरूप पुस्तकालयों का विस्तार हुआ। भारतीयसमाज में अंग्रेजी साहित्य, विज्ञान, गणित, और समाजशास्त्र जैसे विषयों का अध्ययन बढ़ा। इसके अलावा, ब्रिटिश शासन के तहत, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में कई पुस्तकालयों ने शोध और अनुसन्धान की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया।

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पुस्तकालयों का विकास – 1947 में भारत को स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद भारतीय समाज में कई बदलाव आए, और इसके साथ ही पुस्तकालयों के महत्व को भी पहचानागया।
  स्वतंत्र ता संग्राम के बाद भारतीय संविधान में शिक्षा को प्राथमिकता दीगई और इसेजन-जन तकपहुँचाने के लिए पुस्तकालयों का महत्व बढ़ा (Uttarakhand Open University, 2018)[11]।

4. राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने राष्ट्रीय पुस्तकालय की स्थापना की, जो भारतीय साहित्य और संस्कृति का भंडार था। यह पुस्तकालय न केवल ग्रंथों का संग्रह करता था, बल्कि नएज्ञान और शोध के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र भी बन गया। इसके साथसाथ राज्य सरकारों ने- भी स्थानीय पुस्तकालयों के नेटवर्क का विस्तार किया (National Library of India, 2023)[12]।

5. सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास :

भारत सरकार ने 1951में पब्लिक लाइब्रेरी एक्ट को लागू किया, जिसके तहत सार्वजनिक पुस्तकालयों को एक संरचित रूप से विकसित किया गया। इसके बाद, विभिन्न राज्यों ने अपने अपने पुस्तकालय नेटवर्क स्थापित किए। पुस्तकालयों के महत्व-को देखते हुए भारत सरकार ने नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी जैसी योजनाओं का आरंभ किया, जिससे भारतीय नागरिक अब इंटरनेट के माध्यम से भी पुस्तकें और अन्य ज्ञान सामग्री तक पहुँच सकते हैं(Uttarakhand Open University, 2018)[11]।

6. आज के समय में पुस्तकालयों का योगदान –

आज के समय में भारत में पुस्तकालयों का कार्य केवल किताबों का संग्रहण ही नहीं, बल्कि विभिन्न शैक्षिक औरसांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन का भी है। साथ ही, डिजिटल पुस्तकालयों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार और अधिक सुलभ हुआ है(Chakrabarti, 2010)[10]। आज के समय में पुस्तकालयों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये न केवल ज्ञान और सूचना का भंडार हैं, बल्कि विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और सामान्य पाठकों के लिए एक प्रेरणास्रोत भी हैं। डिजिटल युग में भी पुस्तकालय शिक्षा, शोध और आत्मविकास के केंद्र बने हुए हैं। ऑनलाइन संसाधनों, ई-पुस्तकों और डिजिटल अभिलेखों की उपलब्धता ने इन्हें और अधिक सुलभ और उपयोगी बना दिया है। उदाहरण के लिए, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का सायंत्र पुस्तकालय (Sayaji Rao Gaekwad Library) दोनों ही देश के प्रमुख शैक्षणिक पुस्तकालयों में गिने जाते हैं, जहाँ लाखों पुस्तकें, हस्तलिखित पांडुलिपियाँ और डिजिटल संसाधन छात्रों और शोधकर्ताओं को उपलब्ध हैं। BHU का पुस्तकालय विशेष रूप से आयुर्वेद, भारतीय संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में समृद्ध संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। इसके साथ ही, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (NDLI) जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने छात्रों को घर बैठे ही उच्च गुणवत्ता वाला अध्ययन-सामग्री उपलब्ध करवा दी है। इस प्रकार, पारंपरिक और डिजिटल पुस्तकालय मिलकर आज की शिक्षा प्रणाली को मजबूत आधार प्रदान कर रहे हैं।

7. डिजिटल पुस्तकालयों और इंटरनेट का प्रभाव :

आजकल नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी और अन्य डिजिटल संसाधनों के माध्यम से भारत में जानकारी और शोध की पहुँच अत्यधिक बढ़ गई है। अब, लोग इंटरनेट के माध्यम से किसी भी विषय पर शोध कर सकते हैं और पुस्तकालयों के संग्रह तक पहुँच सकते हैं। डिजिटल पुस्तकालयों ने न केवल भारत के शहरी क्षेत्रों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा और ज्ञान का प्रसार किया है। इसके अलावा, पुस्तकालयों में ई बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स की उपलब्धता-ने शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को आसानी से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया है (Rizal Haris, 2016)। डिजिटल पुस्तकालयों और इंटरनेट ने शिक्षा और ज्ञान की दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। अब विद्यार्थी, शिक्षक और शोधकर्ता किसी भी समय, किसी भी स्थान से ज्ञान के विशाल भंडार तक पहुँच सकते हैं। उदाहरण के लिए, **नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (NDLI)**, **गूगल बुक्स**, और **इनफ्लिबनेट (INFLIBNET)** जैसे

प्लेटफॉर्म लाखों ई-पुस्तकों, शोध पत्रों और विडियो व्याख्यानों को मुफ्त में उपलब्ध कराते हैं। इससे ग्रामीण और दूरदराज़ इलाकों के छात्रों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सामग्री प्राप्त हो रही है। इंटरनेट ने भी शिक्षा को इंटरएक्टिव और अपडेटेड बनाया है — जैसे कि **Coursera**, **SWAYAM**, और **Khan Academy** जैसे ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म्स ने छात्रों को अपनी गति से सीखने का अवसर दिया है। इस प्रकार, डिजिटल पुस्तकालयों और इंटरनेट ने शिक्षा को लोकतांत्रिक, सुलभ और आधुनिक बना दिया है। आजकल नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी और अन्य डिजिटल संसाधनों के माध्यम से भारत में जानकारी और शोध की पहुँच अत्यधिक बढ़ गई है। अब, लोग इंटरनेट के माध्यम से किसी भी विषय पर शोध कर सकते हैं और पुस्तकालयों के संग्रह तक पहुँच सकते हैं। डिजिटल पुस्तकालयों ने न केवल भारत के शहरी क्षेत्रों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा और ज्ञान का प्रसार किया है। इसके अलावा, पुस्तकालयों में ई बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स की उपलब्धता-ने शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को आसानी से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया है (Rizal Haris, 2016)[13]।

8. आधुनिक भारत में पुस्तकालय आंदोलन :

आधुनिक भारत में पुस्तकालय आंदोलन का आरंभ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ, जिसका उद्देश्य जनसामान्य में ज्ञान, शिक्षा और जागरूकता का प्रसार करना था। इस आंदोलन की नींव सामाजिक सुधारकों, शिक्षाविदों और स्वतंत्रता सेनानियों ने रखी, जिन्होंने पुस्तकालयों को समाज सुधार और राष्ट्र निर्माण का एक सशक्त माध्यम माना। डॉ. एस.आर. राधाकृष्णन, डॉ. बी.एस. मदन और पं. जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं ने पुस्तकालयों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। स्वतंत्रता के बाद विभिन्न राज्यों में सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम लागू किए गए, जिससे पुस्तकालय प्रणाली को संस्थागत आधार मिला। इस आंदोलन ने न केवल शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में भी अहम भूमिका निभाई।

8.1. चुनौतियाँ और संभावनाएँ (Challenges and Possibilities)

भारतीय पुस्तकालय प्रणाली आज भी कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें अपर्याप्त वित्तीय संसाधन, प्रशिक्षित स्टाफ की कमी, आधुनिक तकनीकी अधोसंरचना का अभाव और ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालयों की न्यून पहुंच प्रमुख हैं (Kumar, 2012)[4] डिजिटल डिवाइड भी एक बड़ी बाधा है, जो ज्ञान के समान वितरण को प्रभावित करती है (Patel & Sharma, 2020)[14]इसके अतिरिक्त, पारंपरिक ज्ञान को डिजिटाइज़ करने की गति धीमी है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा का एक बड़ा भाग अभी भी सीमित उपयोग में है (Mukherjee & Bhattacharya, 2015)[3]।हालाँकि, इन चुनौतियों के बीच कई संभावनाएँ भी उभर रही हैं। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) जैसी पहलें ज्ञान तक पहुँच को व्यापक बनाने का प्रयास कर रही हैं। पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण, मोबाइल पुस्तकालय सेवाओं, और ओपन एक्सेस संसाधनों ने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण को नई दिशा दी है (Kumar & Singh, 2019)[15]। यदि सरकार और शैक्षिक संस्थान मिलकर सतत विकास के लक्ष्य (SDGs) के तहत पुस्तकालयों को ज्ञान-संवर्धन और नवाचार के केंद्रों के रूप में विकसित करें, तो भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुत्थान संभव है।

9. निष्कर्ष(Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली के विकास में पुस्तकालयों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक, पुस्तकालयों ने ज्ञान के प्रसार, संरचनात्मक विकास और शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के डिजिटल युग में, पुस्तकालयों ने अपनी भूमिका को और सशक्त किया है और ज्ञान के एक नए आयाम को जन जन तक पहुँचाने का कार्य किया है।- भारतीय समाज में पुस्तकालयों का योगदान न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से है, बल्कि यह हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के लिए भी आवश्यक है।

REFERENCES :

1. RajKumar, Mohapatra, D. & Sahana, R. (2025). भारतीयज्ञानपरंपरा (प्रणाली) कोभारतीयशिक्षाप्रणालीमेंशामिलकरनेकीओरएककदम (एनईपी 2020). Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences, ISSN(o): 2581-6241, 8(1). DOIs:10.2018/SS/202501005
2. Mandavkar, P. (2023). Indian Knowledge System (IKS).SSRN Electronic Journal. doi: 10.2139/ssrn.4589986
3. Mukherjee, A., & Bhattacharya, P. (2015). *Libraries in Ancient and Medieval India: A Historical Overview*. Indian Journal of Library and Information Science, 9(1), 15–22.
4. Kumar, K. (2012). *Library movement in India*. Ess Ess Publications
5. Ranganathan, S. R. (1931). *The five laws of library science*. Madras Library Association.

6. Ministry of Education, Government of India. (n.d.). National Digital Library of India. Retrieved from https://ndl.iitkgp.ac.in
7. Muktabodha Indological Research Institute. (n.d.). Digital Sanskrit Texts. Retrieved from https://www.muktabodha.org
8. Narasimhan, R. (2006). Education and Libraries in Ancient India. Delhi: Bharatiya Vidya Bhavan.
9. Habib, I. (1999). Medieval India: The Study of a Civilization. New Delhi: National Book Trust.
10. Chakrabarti, A. (2010). Libraries in Colonial India. Kolkata: University of Calcutta Press.
11. Uttarakhand Open University (2018). Foundations of Library and Information Science (pp.5-8). chromeextension://kdpelmjpfafjppnhbloffcjpeomlnpah/https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BLIS101.pdf
12. National Library of India. (2023). Home. https://www.nationallibrary.gov.in/
13. Rizal Haris, A. (2016). The 21st Century Library. Retrieved from https://www.researchgate.net/publication/328528041_The_21st_Century_Library
14. Patel, R., & Sharma, M. (2020). Bridging the Digital Divide: A Study on Rural Libraries in India. *International Journal of Information Research*, 10(2), 112–119.
15. Kumar, D., & Singh, A. (2019). Digital transformation of libraries in India: Opportunities and challenges. *Library Progress (International)*, 39(1), 1–10. https://doi.org/10.5958/2320-317X.2019.00001.7

Other recommended sources

1. DELNET. (n.d.). Developing Library Network. Retrieved from https://delnet.in
2. IGNCA. (n.d.). Indira Gandhi National Centre for the Arts. Retrieved from https://ignca.gov.in
3. Kapoor, K., & Singh, A. K. (Eds.). (2005). Indian knowledge systems. Indian Institute of Advanced Study. Indian-Knowledge-Systems-KapilKapoor.pdf
4. Mandal, A., & Ghosh, S. (2018). Digital Libraries in India: Initiatives and Prospects. DESIDOC Journal of Library & Information Technology, 38(4), 234–240.
5. Tiwari, D., S. (2023). Indian Knowledge System (IKS) as a Significant Corpus of Resources Useful for Personal and Professional Development. International Journal of Humanities and Social Science Invention. 12(9). 191-200.